Volume 1; Issue 2
April to Jun 2025
E-ISSN: 3049-1134

International Journal of Political Studies

Peer Review **Indexed** **Refereed Journal**

Quarterly International Research Journal

International Journal of Political Studies
E-ISSN: 3049-1134
https://www.polsci.in
Volume 1; Issue 2; April to Jun 2025; Page No. 7-20
Peer Review, Indexed and Refereed Journal

दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के दर्शन में साकार विकसित भारत 2047 का स्वप्न

डा. राजेश कुमार सिंह
रिसर्च फेलो
पंडित दीनदयाल उपाध्याय पीठ
राजनीतिशास्त्र विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज

Abstract

भारत को विकसित देशों के साथ बराबरी करने के लिए उसे अपनी आर्थिक, सामाजिक, और तकनीकी बुनियादों को मजबूत करने की आवश्यकता है। वहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, अनुसंधान और नवाचार, इंफ्रास्ट्रक्चर विकास, और गरीबी की उन्मूलन को प्राथमिकता देने की जरूरत है| इसके लिए हमें विशेष रूप से गरीबी, भूमि संबंधी संकट, जल संकट, तकनीकी उन्नति, और जनसंख्या नियंत्रण को सामना करने की आवश्यकता है। भारत को संविधान के मूल्यों और नैतिकता के साथ एक समृद्ध और समान समाज का निर्माण करने के लिए प्रयास करना होगा। लेकिन क्या कुछ सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और राष्ट्रवादी प्रयासों से हम विकसित भारत के लक्ष्य को आसानी से नहीं पा सकते? सोचिए अगर ऐसा हो कि विकसित भारत का लक्ष्य जन जन का एकीकृत स्वप्न बन जाए तो या फिर हर भारतीय संगठित होकर पूँजीवाद और साम्यवाद के दायरे से बाहर निकलकर मानववाद की ओर अग्रसर हो जाए तो? क्या हम विकास के गुणात्मक मानकों को विकास के आर्थिक मानकों से पहले नहीं पा सकेंगे? इसी संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी कहते थे कि, "भारतीय परम्परा मानव को एकात्म मानती है, एकात्म यानी जिसको बाँटा नहीं जा सकता और हमारी राष्ट्रीयता का आधार सिर्फ भारत नहीं बल्कि भारत माता है; 'माता' शब्द हटा दीजिये तो भारत सिर्फ ज़मीन का टुकड़ा भर बनकर रह जाएगा", तो फिर क्यों न विकसित भारत 2047 के स्वप्न को एकात्म मानववाद की नज़र ही न देखा जाए?

मुख्य शब्द: *दीनदयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, विकसित भारत 2047*

क्या भारत सचमुच **2047** तक अन्य पश्चिमी देशों की तरह विकसित देश बन सकता है, यह एक व्यापक प्रश्न है। यह संभव है, लेकिन यह बहुत संघर्षपूर्ण होगा और कई बड़े चुनौतियों का सामना करना होगा। इसके लिए हमें सकारात्मक नीतियों, नवाचारों, और तेजी से विकास के लिए सामर्थ्य विकसित करने की आवश्यकता है।

भारत को विकसित देशों के साथ बराबरी करने के लिए उसे अपनी आर्थिक, सामाजिक, और तकनीकी बुनियादों को मजबूत करने की आवश्यकता है। वहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, अनुसंधान और नवाचार, इंफ्रास्ट्रक्चर विकास, और गरीबी की उन्मूलन को प्राथमिकता देने की जरूरत है| इसके लिए हमें विशेष रूप से गरीबी, भूमि संबंधी संकट, जल संकट, तकनीकी उन्नति, और जनसंख्या नियंत्रण को सामना करने की आवश्यकता है। भारत को संविधान के मूल्यों और नैतिकता के साथ एक समृद्ध और समान समाज का निर्माण करने के लिए प्रयास करना होगा।

लेकिन क्या कुछ सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और राष्ट्रवादी प्रयासों से हम विकसित भारत के लक्ष्य को आसानी से नहीं पा सकते? सोचिए अगर ऐसा हो कि विकसित भारत का लक्ष्य जन जन का एकीकृत स्वप्न बन जाए तो या फिर हर भारतीय संगठित होकर पूँजीवाद और साम्यवाद के दायरे से बाहर निकलकर मानववाद की ओर अग्रसर हो जाए तो? क्या हम विकास के गुणात्मक मानकों को विकास के आर्थिक मानकों से पहले नहीं पा सकेंगे?

इसी संदर्भ में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी कहते थे कि, "भारतीय परम्परा मानव को एकात्म मानती है, एकात्म यानी जिसको बाँटा नहीं जा सकता और हमारी राष्ट्रीयता का आधार सिर्फ भारत नहीं बल्कि भारत माता है; 'माता' शब्द हटा दीजिये तो भारत सिर्फ़ ज़मीन का टुकड़ा भर बनकर रह जाएगा" , तो फिर क्यों न विकसित भारत **2047** के स्वप्न को एकात्म मानववाद की नज़र ही न देखा जाए?

क्या है विकसित भारत 2047 **का औपचारिक संदर्भ**?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने देश की आजादी के **100** साल पूरे होने तक भारत को विकसित देशों की कतार में खड़े करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया है| अब सरकारी थिंकटैंक नीति आयोग ने देश को विकसित बनाने का खाका तैयार किया है| नीति आयोग का कहना है कि विकसित बनने के लिए **2047** तक भारत को **30** ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बनने का प्रयास करना होगा और प्रति व्यक्ति आय को सालाना **18** हजार डॉलर पर लेकर जाना होगा| नीति आयोग ने देश को विकसित बनाने

के लिए 'विजन फोर विकसित भारत **@ 2047:** ऐन अप्रोच पेपर' में खाका प्रस्तुत किया | आयोग ने कहा कि विकसित भारत का लक्ष्य पाने के लिए अर्थव्यवस्था को **3.36** ट्रिलियन डॉलर के मौजूदा स्तर से **9** गुना वृद्धि करने की जरूरत है. इसी तरह प्रति व्यक्ति आय को सालाना **2,392** डॉलर के स्तर से **8** गुना बढ़ाना होगा | विकसित बनने के लिए हमें **2047** तक **30** ट्रिलियन डॉलर की इकोनॉमी बनना होगा और **18** हजार डॉलर की प्रति व्यक्ति सालाना आय को हासिल करना होगा | आयोग ने पेपर में ये भी बताया है कि विकसित भारत का वास्तव में मतलब क्या है |आयोग के अनुसार, विकसित भारत ऐसा भारत होग, जिसमें एक विकसित देश के सारे गुण होंगे और प्रति व्यक्ति आय ऐसी होगी, जिसकी तुलना आज की दुनिया के उच्च आय वाले देशों के साथ की जा सकेगी |भारत को इसके लिए मध्यम आय वाले देश से प्रोग्रेस कर उच्च आय वाला देश बनना होगा |

विकसित भारत 2047 **का निहितार्थ:**

विकसित भारत का विचार एक महत्वपूर्ण विषय है। विकसित भारत का अर्थ है कि हम समृद्धि, समानता, और समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं, साथ ही विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और सामाजिक विकास के क्षेत्र में भी प्रगति कर रहे हैं। विकसित भारत का सपना हर नागरिक के लिए स्वतंत्रता, अधिकार, और समर्थन का संगठित समूह होना चाहिए। इस सपने को हासिल करने के लिए हमें शिक्षा, स्वास्थ्य, और आत्मनिर्भरता के माध्यम से सभी वर्गों को सशक्त करने की आवश्यकता है। विकसित भारत की अपेक्षा की जाती है कि हम सभी मिलकर देश को महान बनाएं, जहां सभी का समान अधिकार हो, और सभी को उनकी संपूर्णता तक पहुंचने का मौका मिले।

विकसित भारत 2047 **के संभावित मापदंड:**

विकसित भारत के मापदंडों को निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया जा सकता है:

- समृद्धि (आर्थिक विकास)
- सामर्थ्य (प्रौद्योगिकी और विज्ञानिक उन्नति
- सामाजिक समृद्धि (समाज में समानता और न्याय)
- शिक्षा और ज्ञान की उन्नति
- स्वास्थ्य सेवाएं और जीवन का गुणवत्ता
- पर्यावरणीय संरक्षण और समुदाय की सहभागिता
- सुरक्षित और समर्थ राजनीतिक और सामाजिक संरचना
- साक्षरता और उद्यमिता की बढ़ती हिदायत

इन पैरामीटर्स के अनुसार, विकसित भारत का सपना एक समृद्ध, समान और सशक्त समाज का निर्माण है, जो अपने नागरिकों को सुख, सुरक्षा और समृद्धि प्रदान कर सके।

क्या और क्यों हैं पं० दीनदयाल उपाध्याय इतने प्रासंगिक विकसित भारत 2047 **के संदर्भ में**?

बेशक दीनदयाल उपाध्याय जी ने शब्दशः **2047** तक विकसित भारत के सपने को रेखांकित नहीं किया लेकिन उनके विचारों का हर पहलू भारत की सार्वभौमिक श्रेष्ठता स्थापित करने के वैचारिक एवं सामाजिक पक्ष को शुरुआत से ही रेखांकित करता आया था | वो भारत को एक सम्पूर्ण राष्ट्र बनते देखना चाहते थे और उस सम्पूर्णता को फलीभूत करने के लिए उन्होंने एक संगठित विमर्श को विस्तारित करने का सतत् , अथक एवं निस्वार्थ प्रयास किया | निम्नलिखित बिंदुओं में उनकी वैचारिक पृष्ठभूमि के निर्माण के संभावित कारण दिये गए हैं:

- उनका अभाव पूर्ण बचपन और संघर्ष भरा प्रारंभिक जीवन - इस वजह ने उन्हें भारत और भारतीयों के लिए एक खुशहाल और आत्मनिर्भर भविष्य का सपना देखने के लिए प्रेरित किया जो वर्तमान संदर्भों में विकसित भारत के ही सामानांतर एक विचार था |

- भारत विभाजन की विभीषिका का प्रत्यक्ष अनुभव : दीनदयाल जी ने भारतवर्ष नाम की अखण्ड राष्ट्रीय ईकाई को टूटते और बंटते देखा था जिससे वो अत्यधिक विचलित हो गए थे और उनका भारतीय सम्पूर्णता का स्वप्न धूमिल हो गया था | कहीं न कहीं इसी विभाजन की विभीषिका ने उनको सामाजिक समरसता के सुदृढ़ीकरण के ओर प्रेरित किया और यहीं से 'एकात्म मानववाद' या इंटीग्रल ह्यूमनिज्म के दर्शन की नींव पड़ी |

- संयुक्त परिवार परंपरा में गहरी आस्था : दीनदयाल जी ने अपने पिता पंडित भगवती प्रसाद जी को हमेशा संयुक्त परिवार में तालमेल बैठाते और पारिवारिक कलह को शांत करते देखा था | यहीं से उनके अवचेतन मन में यह गहरी छाप पड़ गई कि विकास का मूल आधार संयुक्त प्रयास एवं आपसी सामंजस्य है और उनके चिंतन में एकात्म के दर्शन को और धार मिली

- मृत्यु दर्शन : नितांत किशोरमय अवस्था में ही माता, पिता, नाना, नानी, मामी और अपने अनुज की मृत्यु देखकर दीनदयाल जी को अनुभव सिध्द किया | उनको मानव जीवन की क्षणभंगुरता का एहसास हर पल होता रहा और उनका बचपन से ही एकता, लगाव, प्रेम और सामूहिकता में विश्वास बढ़ता गया | परिणामस्वरूप परिवार संरक्षण से आगे बढ़कर उन्होंने राष्ट्र संवर्धन एवं मनुष्यता के संरक्षण

का बीड़ा उठाया जिसे एकात्म मानववाद के रूप में स्वीकृति मिली |

- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पाठशाला :मुस्लिम लीग के द्वि-राष्ट्रवाद एवं विभाजनकारी रवैये ने युवा दीनदयाल को काफी आहत किया और उन्हें अपना एकीकरण एवं राष्ट्रीयता का स्वप्न टूटता हुआ दिखा | खैर इसी समय उनके सहपाठी श्री बालूजी महाशब्दे ने उनका साक्षात्कार डा० हेडगेवार से करवाया और **1939** और **1942** में उन्होंने संघ शिक्षा वर्ग में प्रतिभाग किया | जब सावरकर जी कानपुर आए तो दीनदयाल जी ने उन्हें संघ की शाखा में आमंत्रित कर बौद्धिक वर्ग करवाया | इन्हीं सब सक्रियतावादी प्रयासों ने उनके राष्ट्रवादी वैचारिक पक्ष को और सुदृढ़ करने में मदद की|

- लेखन एवं पत्रकारिता : दीनदयाल जी ने दो राष्ट्रवादी उपन्यास लिखे - “सम्राट चंद्रगुप्त” और “जगद्गुरु शंकराचार्य” जिनसे तत्कालीन युवा पीढ़ी पर गहरा प्रभाव पड़ा | आगे चलकर उन्होंने राष्ट्रधर्म व पांचजन्य के प्रकाशन में भी अमूल्य सहायता प्रदान की | उनके लेखन का मूल तत्व गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत को आधार बनाकर नवयुवकों में राष्ट्रीय चेतना का संचार करना था जिसमें वो काफी सफल भी रहे और उनके अखण्ड भारत एवं एकात्म मानववाद के लक्ष्य को अत्यधिक स्वीकृति भी मिली |

अखण्ड भारत, **एकात्म मानववाद और विकसित भारत** 2047 :

दीनदयाल जी के अनुसार अखण्ड भारत देश की भौगोलिक एकता का ही परिचायक नहीं अपितु जीवन के भारतीय दृष्टिकोण का द्योतक है जो अनेकता में एकता का दर्शन कराता है, ये कोई राजनैतिक नारा नहीं है बल्कि यह तो हमारे संपूर्ण जीवन का मूलाधार है | उन्होंने अपनी पुस्तिका “अखण्ड भारत क्यों?” में प्राचीन भारत के साहित्य को संदर्भित करते हुए यहाँ अनंत काल से चलने वाली उस सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परम्परा का उल्लेख किया है जो भौगोलिक भारत को एक एकात्म राष्ट्र के रूप में विकसित करने में समर्थ हुई थी | विभाजन से कुपित होकर उन्होंने कहा कि दिल्ली में हमारे नेता कुमकुम तिलक लगा रहे थे जबकि पंजाब में हमारी माताओं और बहनों का सिंदूर पुछ रहा था | इसी क्रम में उन्होंने अखण्डता के आधार पर वसुधैव कुटुम्बकम को पटल पर रखकर एकात्म मानववाद के दर्शन को संगठित करने का काम किया |

जब जब हम विकसित भारत **2047** के लक्ष्य की बात करते हैं तब तब हमें एकीकृत प्रयास, सामाजिक एकता, एवं राष्ट्रीय चेतना का भी ध्यान

रखना पड़ता है क्योंकि बिना इनके कोई भी आर्थिक या वैज्ञानिक प्रयास फलीभूत हो ही नहीं सकता | और तो और किसी भी प्रकार के आर्थिक, वैज्ञानिक या तकनीकी लाभ का भी बिना समाजिक एकीकरण के उपभोग नहीं किया जा सकता | अन्तोगत्वा विकसित भारत **2047** के मूल में हमें हर तरह से एकात्म मानववाद का ही प्रत्यक्षीकरण प्रतीत होता है |

एकात्म मानववाद का संदर्भ:

एकात्म मानववाद का विचार विकसित भारत के सपने से गहराई से जुड़ा हुआ है। इस विचार का मूल मकसद है मानवता की पूर्णता को प्राप्त करना।एकात्म मानववाद के अनुसार, एक समृद्ध और उन्नत भारत की स्थापना मानवता के सम्पूर्ण विकास और उन्नति पर आधारित होनी चाहिए। इसमें समाज, आर्थिक, सांस्कृतिक और तात्कालिक मुद्दों को सम्मिलित किया जाता है।

एकात्म मानववाद का सिद्धांत हमें समाज के हर वर्ग के समृद्धि और समानता की दिशा में आगे बढ़ने की दिशा देता है। इसका सपना एक समृद्ध, समान और समर्थ समाज का निर्माण है जो मानवता के सम्पूर्ण विकास के लिए संघर्षरत है। एकात्म मानववाद और विकसित भारत के सपने के बीच गहरा संबंध है, क्योंकि विकसित भारत का सपना भी मानवता के संपूर्ण विकास के लिए है, जिसमें समृद्धि, समानता और समाज की समर्थीकरण की भावना होती है।

दीन दयाल उपाध्याय के विचार भारत के विकास के आकांक्षित दृष्टिकोण के साथ गहराई से जुड़े हैं। उनका सिद्धांत "एकात्म मानववाद" के माध्यम से मानव समाज के समृद्धि और समृद्धि का प्रमुख उद्देश्य है। उनके विचारों का मुख्य तत्व है समाज में समरसता, समृद्धि, और समानता को प्राप्त करना।

दीन दयाल उपाध्याय के विचार भारतीय समाज के निर्माण में सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक क्षेत्र में समृद्धि और समानता की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। उनका दृष्टिकोण उन्नति के लिए समृद्धि के साथ ही समाज के सभी वर्गों के विकास को ध्यान में रखता है। उनके विचार भारत के विकास के सपने को समृद्ध, समान और समृद्ध भारत की दिशा में दिशानिर्देश प्रदान करते हैं, जिसमें समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलें और सभी को उनकी संपूर्णता तक पहुंचने का मौका मिले।

एकात्म मानववाद की वर्तमान प्रासंगिकता-

आज विश्व की एक बड़ी आबादी गरीबी में जीवन यापन कर रही है। विश्वभर में विकास के कई मॉडल लाए गए लेकिन आशानुरूप परिणाम नहीं मिला। अतः दुनिया को एक ऐसे विकास मॉडल की तलाश है जो एकीकृत और संधारणीय हो। एकात्म

मानववाद ऐसा ही एक दर्शन है जो अपनी प्रकृति में एकीकृत एवं संधारणीय (**Integral and sustainable)** है। एकात्म मानववाद का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन सुनिश्चित करना है। यह प्राकृतिक संसाधनों के संधारणीय उपभोग का समर्थन करता है जिससे कि उन संसाधनों की पुनः पूर्ति की जा सके।

एकात्म मानववाद न केवल राजनीतिक बल्कि आर्थिक एवं सामाजिक लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता को भी बढ़ाता है। यह सिद्धांत विविधता को प्रोत्साहन देता है अतः भारत जैससे विविधतापूर्ण देश के लिए यह सर्वाधिक उपयुक्त है। एकात्म मानववाद का उद्देश्य प्रत्येक मानव को गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना है एवं 'अंत्योदय' अर्थात समाज के निचले स्तर पर स्थित व्यक्ति के जीवन में सुधार करना है। इस प्रकार, यह दर्शन भारत जैसे कल्याणकारी राज्य में सदैव प्रासंगिक रहेगा।

मुख्य स्तम्भ:

1-विदेशी विचारों की ललक घातक

2-हर समाज अलग, उनकी समस्याएं और समाधान भी अलग-

3-एकांगी सोच से केवल संघर्ष का जन्म-

4-संघर्ष नहीं समन्वय है मानव संस्कृति का आधार

5-राष्ट्र की तुलना में समाज ज्यादा महत्वपूर्ण-

6-समाज और व्यक्ति के हित परस्पर पूरक-

7-धर्म ही हमारा प्राण-

8-आर्थिक उपभोग में मर्यादा जरूरी

9-शिक्षा समाज का दायित्व

10-न्यूनतम का जन्मसिद्ध अधिकार-

क्या है यह एकात्म मानव-दर्शन?

मूलतः यह भारतीय संस्कृति, विचार और दर्शन का निचोड़ है. जिस समय पूरा विश्व पूंजीवाद और साम्यवाद की अच्छाई-बुराई की बहस में उलझा था, पं दीनदयाल ने हस्तक्षेप करते हुए इन दो चरम विचारधाराओं से इतर एकात्म मानववाद की सम्यक अवधारणा दी थी. जहाँ पूंजीवाद ने मानव को एक आर्थिक इकाई माना और उसके समाज से संबंधों को एक अनुबंध से ज्यादा कुछ नहीं समझा, साम्यवाद ने व्यक्ति को मात्र एक राजनीतिक और कार्मिक इकाई माना. साम्यवाद के प्रवर्तक मार्क्स ने मानव-समाज को एक विखंडित आपसी संबंध-विहीन भीड़ की तरह देखा, जिसमें एक वर्ग अपना आधिपत्य जमाने के लिए स्वार्थपूर्ण नियम और प्रथाओं को लागू करता है. समाजवाद में भी व्यक्ति को एकांगी माना गया. पर इन सबसे परे, एकात्म मानववाद ने व्यक्ति को परिवार से, परिवार को समाज से, समाज को राष्ट्र से और फिर मानवता और चराचर सृष्टि से जोड़ कर देखा. 'एकात्म

मानववाद' इन सब इकाइयों में अंतर्निहित, परस्पर-पूरक संबंध देखता है|

भारतीय चिंतन जिस तरह से सृष्टि और समष्टि को एक समग्र रूप में देखता है, वैसे ही पं दीनदयाल ने मानव, समाज और प्रकृति व उसके संबंध को समग्र रूप में देखा. मनुष्य को 'एकात्म मानव-दर्शन' में तन-मन-बुद्धि और आत्मा का सम्मिलित स्वरूप माना गया. मानव की यह समग्रता ही उसे समाज के लिए उपयुक्त और उपादेय बनाती है.

विकसित भारत' के विभिन्न पहलू कौन-से हैं?

संरचनात्मक रूपांतरण: यह निम्न उत्पादकता वाले क्षेत्रों (जैसे कृषि) से उच्च उत्पादकता वाले क्षेत्रों (जैसे विनिर्माण एवं सेवाएँ) की ओर संसाधनों के संक्रमण को संदर्भित करता है। इससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिल सकता है, रोज़गार सृजित हो सकते हैं और गरीबी कम हो सकती है। श्रम बाज़ारों का निर्माण: इसमें श्रम आपूर्ति की गुणवत्ता एवं मात्रा में सुधार लाना, श्रमिकों के कौशल एवं रोज़गार योग्यता को बढ़ाना और निष्पक्ष एवं कुशल श्रम नियमों को सुनिश्चित करना शामिल है। इससे श्रम उत्पादकता बढ़ सकती है, अनौपचारिकता कम हो सकती है और सामाजिक सुरक्षा को बढ़ावा मिल सकता है।

प्रतिस्पर्द्धात्मकता बढ़ाना: इसमें कंपनियों की दक्षता एवं नवाचार को बढ़ाना, उत्पादों एवं सेवाओं की गुणवत्ता एवं विविधता में सुधार करना और घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों का विस्तार करना शामिल है। इससे आर्थिक गतिशीलता को बढ़ावा मिल सकता है, निर्यात बढ़ सकता है और निवेश आकर्षित हो सकता है।

वित्तीय और सामाजिक समावेशन में सुधार: इसमें गरीबों और हाशिए पर रहने वाले समूहों के लिये वित्तीय सेवाओं और सामाजिक कल्याण योजनाओं की पहुँच एवं सामर्थ्य का विस्तार करना शामिल है। इससे उनकी आय, बचत और उपभोग के साथ-साथ उनके स्वास्थ्य, शिक्षा और सशक्तीकरण में सुधार हो सकता है।

शासन सुधार: इसमें शासन की संस्थाओं और प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करना शामिल है, जैसे विधि का शासन, जवाबदेही, पारदर्शिता और भागीदारी। इससे सार्वजनिक वस्तुओं एवं सेवाओं के वितरण में सुधार हो सकता है, भ्रष्टाचार कम हो सकता है और विश्वास एवं की वृद्धि हो सकती है।

हरित क्रांति के अंतर्गत अवसरों का लाभ उठाना: इसमें नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता और जलवायु प्रत्यास्थता जैसी हरित प्रौद्योगिकियों और अभ्यासों को अपनाना और उन्हें बढ़ावा देना शामिल है। इससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम

किया जा सकता है, पर्यावरणीय क्षति का शमन हो सकता है और वृद्धि एवं विकास के नए अवसर पैदा हो सकते हैं।

विकसित भारत का आर्थिक परिदृश्य एवं विमर्श:

भारत इस समय विकासशील देश है। अब भारत के विकसित राष्ट्र बनने की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल होने की संभावनाओं के कई आधार हैं। भारत दुनिया में वैश्विक सुस्ती की चुनौतियों के बीच आर्थिक विकास की डगर पर लगातार तेजी से आगे बढ़ रहा है। हाल ही में **26** अप्रैल को प्रकाशित वैश्विक परामर्श एजेंसी डेलॉयट इंडिया की नई रिपोर्ट के तहत वित्त वर्ष **2024-25** के लिए भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी)की वृद्धि का अनुमान बढ़ाकर **7.6** से **7.8** प्रतिशत कर दिया है। कहा गया है कि भारत में मध्यम आय वर्ग के लोगों की संख्या में तेज वृद्धि से क्रय शक्ति बढ़ी है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले **2** साल से वृद्धि के मजबूत आंकड़ों ने अर्थव्यवस्था को कोविड के पहले के स्तर में आने में मदद की है।

बुनियादी ढांचे पर सरकार के व्यय में तेजी से निवेश को समर्थन मिला है। इससे भारत को वृद्धि की रफ्तार तेज रखने में मदद मिली है। निस्संदेह यह रिपोर्ट ऐसे समय में आई है, जब कुछ दिन पहले ही अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने मजबूत घरेलू मांग और कामकाज करने वाली आबादी को देखते हुए वित्त वर्ष **2024-25** के लिए भारत का वृद्धि अनुमान **6.5** प्रतिशत से बढ़ाकर **6.8** प्रतिशत कर दिया है। साथ ही विश्व बैंक ने भी वित्त वर्ष **2024-25** के लिए भारत की वृद्धि का अनुमान **6.4** प्रतिशत से बढ़ाकर **6.6** प्रतिशत कर दिया है। निश्चित रूप से विकसित भारत बनने के लिए भारत की मुट्ठियों में कई महत्त्वपूर्ण संभावनाएं हैं। भारत में पिछले वर्ष **2023** में आयोजित जी-**20** के शानदार सफल आयोजन से भारत के पास विकास के नए सूत्र आए हैं। भारत के पास पिछले **10** वर्षों की शानदार विरासत है। यह भारत का ऐसा समय है जब हमारी आर्थिक वृद्धि लगातार बढ़ रही है। भारत में स्थिति मैन्युफेक्चरिंग, निवेश और निर्यात के मद्देनजर उपयुक्त है। मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत अभियान से देश तेजी से आगे बढ़ा है। वैश्विक स्तर पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में गिरावट के रुझान के बीच भारत दुनिया के सर्वाधिक एफडीआई प्राप्त करने वाले प्रमुख देशों में शामिल है। भारत का विदेशी मुद्रा भंडार भी तेजी से बढ़ा है। वैश्विक सुस्ती के बीच भारत का शेयर बाजार नई ऊंचाइयों पर है। पिछले एक दशक में हुए रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफार्म देश के विकास के लिए गेमचेंजर रहे हैं।

भारत में अहम आर्थिक सुधार हुए और इन सुधारों में जन धन, आधार और मोबाइल आधारित

सब्सिडी सुधार (जेएएम) वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) तथा ऋणशोधन अक्षमता एवं दिवालिया संहिता (आईबीसी) प्रमुख हैं। निस्संदेह इस समय भारत के पास टिकाऊ विकास के अभूतपूर्व अवसर हैं। वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक मंचों पर भारत को विशेष अहमियत दी जा रही है। भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थाई सदस्य देश बनाने के लिए अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस और रूस का समर्थन रेखांकित हो रहा है और भारत वैश्विक मंच पर बड़ी भूमिका के लिए तैयार है। भारत के तेजी से बढ़े कृषि क्षेत्र से दुनिया की उम्मीदें बढ़ गई हैं। तेजी से बढ़ते भारतीय बाजार के कारण भारत के मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) बढ़ रहे हैं। प्रवासी भारतीयों के द्वारा लगातार भारत की ओर अधिक रेमिटेंस भेजा जा रहा है। इस समय देश के वैज्ञानिकों के द्वारा अंतरिक्ष आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर, ऊर्जा तथा नए तकनीकी विकास के कारण आर्थिक विकास को गति मिल रही है चीन के प्रति बढ़ती नकारात्मकता के मद्देनजर भारत नए वैश्विक आपूर्तिकर्ता देश के रूप में उभरकर सामने आया है। अब भारत में लॉजिस्टिक लागत में कमी आने लगी है।

विश्व बैंक की नज़र में भारत की तत्कालीन स्थिति:

भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में एक है और यह **2047** तक उच्च मध्य आय के दर्जे तक पहुंचने की आकांक्षा के साथ इस पथ पर आगे बढ़ने के लिए तैयार है। देश यह भी सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि विकास का इसका जारी क्रम जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार है और **2047** तक नेट-जीरो उत्सर्जन का अपना लक्ष्य हासिल करने के अनुरूप है।

पिछले दो दशक के विकास के परिणामस्वरूप भारत ने अत्यधिक गरीबी को कम करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। अनुमान है कि **2011** और **2019** के बीच, देश में अत्यधिक गरीबी में रहने वाली आबादी का हिस्सा घटकर आधा - प्रति व्यक्ति प्रति दिन **2.15** डॉलर (**2017** पीपीपी) से नीचे (विश्व बैंक गरीबी और असमानता पोर्टल और मैक्रो गरीबी आउटलुक, स्प्रिंग **2023) -** रह गया है। हालांकि, हाल के वर्षों में, गरीबी में कमी की गति, विशेष रूप से कोविड-**19** महामारी के दौरान, धीमी हो गयी है लेकिन **2021-22** से मध्यम हो गयी है।

कुछ चुनौतियां बनी रहती हैं। पिछले दो दशकों में लगभग **35** के स्तर के गिनी सूचकांक के साथ उपभोग में असमानता जारी है। बाल कुपोषण उच्च स्तर पर बना हुआ है। पांच वर्ष से कम उम्र के

35.5 प्रतिशत बच्चों अविकसित हैं जबकि **6-59** महीने के आयु वर्ग के बच्चों में यह आंकड़ा बढ़कर **67** प्रतिशत हो गया है। प्रमुख रोजगार संकेतकों में **2020** के बाद से सुधार हुआ है, लेकिन नौकरियों की गुणवत्ता और वेतन में वास्तविक वृद्धि के साथ-साथ श्रमबल में महिलाओं की कम भागीदारी को लेकर चिंताएं बनी हुई हैं।

वर्ष **2047** तक उच्च आय दर्जा हासिल करने की भारत की आकांक्षा को जलवायु-लचीली विकास प्रक्रिया के जरिए साकार करने की आवश्यकता होगी जो आबादी के निचले आधे हिस्से को व्यापक लाभ प्रदान करे। विकास को प्रोत्साहित करने वाले सुधारों के साथ-साथ अच्छी नौकरियों में विस्तार की आवश्यकता होगी जो श्रम बाजार में प्रवेश करने वालों की संख्या के साथ तालमेल बनाये रखें। साथ ही, अधिक महिलाओं को कार्यबल में लाके आर्थिक भागीदारी में अंतर से निपटने की आवश्यकता होगी।

विश्व बैंक हरित, लचीले और समावेशी विकास के जरिए से देश और उसके लोगों के लिए बेहतर भविष्य बनाने के लिए नीतियों, संस्थानों और निवेश को मजबूत करने में मदद करके इस प्रयास में सरकार के साथ साझेदारी कर रहा है।

आर्थिक दृष्टिकोण

कोविड-**19** महामारी के कारण वित्त वर्ष **2020/21** में वास्तविक जीडीपी में गिरावट के बाद, वित्त वर्ष **2021/22** में उदार मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों और व्यापक वैक्सीन कवरेज से विकास में मजबूती से वापसी हुई। नतीजतन, **2022** में, भू-मंडलीय तनाव - आपूर्ति लाइनों में नये सिरे से व्यवधान, वैश्विक मौद्रिक नीतियों की समकालीन सख्ती और मुद्रास्फीति के दबाव समेत वैश्विक परिवेश में महत्वपूर्ण चुनौतियों - के बावजूद, भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा।

वित्त वर्ष **22/23** में, भारत की वास्तविक जीडीपी अनुमानित **6.9** प्रतिशत की दर से बढ़ी। विकास को मजबूत घरेलू मांग, बुनियादी ढांचे में निवेश के लिए सरकार के दबाव से मजबूत निवेश गतिविधि और विशेष रूप से उच्च आय अर्जित करने वालों के बीच निजी खपत में वृद्धि से बल मिला। राजकोषीय मजबूती के कारण सरकारी खपत कम होने से घरेलू मांग की संरचना भी बदल गयी।

हालांकि, वित्त वर्ष **2022-23** की तीसरी तिमाही के बाद से, नरमी के संकेत मिले हैं, समग्र विकास गति मजबूत बनी हुई है। उधार लेने की बढ़ती लागत, कड़ी वित्तीय स्थिति और चल रहे मुद्रास्फीति दबाव समेत लगातार प्रतिकूल परिस्थितियों का वित्त वर्ष **2023/24** में भारत की

वृद्धि पर असर पड़ने की उम्मीद है। वास्तविक जीडीप वृद्धि वित्त वर्ष **2022/23** के अनुमानित **6.9** प्रतिशत से घटकर वित्त वर्ष **2023/24** में **6.3** प्रतिशत होने की संभावना है।

वित्त वर्ष **20/21** में सामान्य सरकारी राजकोषीय घाटा और जीडीपी अनुपात में सार्वजनिक ऋण, दोनों में तेजी से वृद्धि हुई है और तब से धीरे-धीरे गिरावट आ रही है, और राजकोषीय घाटा वित्त वर्ष **20/21** के **13** प्रतिशत से गिरकर वित्त वर्ष **22/23** में अनुमानित **9.4** प्रतिशत हो गया है। इसी अवधि में सार्वजनिक ऋण जीडीपी के **87** प्रतिशत से गिरकर लगभग **83** प्रतिशत हो गया है। दृढ़ीकरण काफी हद तक राजस्व में वृद्धि और महामारी से संबंधित प्रोत्साहन उपायों की क्रमिक वापसी से प्रेरित है। साथ ही, सरकार विकास और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देने के लिए, विशेषकर बुनियादी ढांचे पर पूंजीगत व्यय बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

विकसित भारत 2047 **के स्वप्न में बाधाएं:**

हालांकि **2047** तक विकसित बनने का लक्ष्य पाना इतना आसान नहीं है | नीति आयोग ने इस राह की चुनौतियों के बारे में भी बताया है. बकौल आयोग, भारत को मिडल-इनकम ट्रैप में फंसने से बचना होगा और इससे बाहर आने के लिए सावधानी से काम करना होगा | उच्च-आय वाला देश बनने के लिए भारत को अगले **20-30** सालों तक **7** से **10** फीसदी की दर से आर्थिक वृद्धि की रफ्तार बरकरार रखने की जरूरत होगी. यह आसान नहीं है. अभी तक दुनिया में गिने-चुने देश ही ऐसी रफ्तार लंबे समय तक बरकरार रख पाए हैं |

भारत के विकास के मार्ग में कई बाधाएं हैं, जो निम्नलिखित हैं:

आर्थिक असंतुलन: अर्थव्यवस्था में असंतुलन, उच्च बढ़ती मुद्रा और अधिकतर वित्तीय आंकड़े कई आर्थिक संकटों का कारण बनते हैं।

जनसंख्या बढ़ोत्तरी: जनसंख्या का तेजी से बढ़ता विकास का बाधक है, जिससे संसाधनों का बदलाव होता है।

भू-राजनीतिक संघर्ष: भूमि के अधिग्रहण, स्थल का अनुचित उपयोग और जमीन संबंधी समस्याएं विकास को रोकती हैं।

तंत्र-विरोध: अद्यात्मिक और सांस्कृतिक विविधता के बीच तंत्र-विरोध और समाज में विवाद है, जो विकास की राह को अवरुद्ध करता है।

अपर्याप्त शिक्षा: शिक्षा की गुणवत्ता में कमी, असमानता और अपर्याप्त शिक्षा बाधाएं उत्पन्न करती हैं।

आवास समस्या: अपर्याप्त आवास, अनिवासियों की संख्या में वृद्धि और अस्थाई आवास संकट विकास को प्रभावित करते हैं।

जल संकट: जल संकट, पानी की कमी और जल संवर्धन की अभावना भारत के विकास को अवरुद्ध करते हैं।

इन बाधाओं को पार करते हुए, भारत अपने विकास के मार्ग पर अग्रसर हो सकता है। लेकिन इन सभी समस्याओं के सम्पूर्ण निवारण में जो सबसे प्रभावी मूलमंत्र है, वो है पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद का सिध्दांत|

विश्वगुरु भारत एवं एकात्म मानववाद :

भारत वह देश है जिसने पृथ्वी पर रहने वाले लोगों को परिवार का सदस्य मानते हुए 'वसुधैव कुटुंबकम का संदेश दिया। इसीलिए हमने न तो किसी देश पर हमला किया और न ही एक इंच जमीन पर कब्जा किया। रामायण और महाभारत की कथाओं में हमने पुष्पक विमान, अग्निबाण और आकाशवाणी जैसी तकनीकों के बारे में खूब पढ़ा है। हम यह भी देखते आ रहे हैं कि हमारे वेद-पुराणों पर देश-विदेश में रिसर्च होते आ रहे हैं, जिनसे विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में खूब मदद मिलती रही है , इन क्षेत्रों में भारत कैसे वाकई में 'विश्व गुरु रहा है।भारतीय आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए सार्वभौमिक विचारों से संवाद स्वामी विवेकानंद जी की प्रमुख विशेषता रही। उन्होंने कहा था भारत एक बार फिर समृद्धि तथा शक्ति की महान ऊँचाइयों पर उठेगा और अपने समस्त प्राचीन गौरव को पीछे छोड़ जाएगा, भारत पुन: विश्व गुरु बनेगा, जो पूरे संसार का पथ प्रदर्शन करने में समर्थ होगा। उन्होंने घोषणा की कि भारत का विश्व गुरु बनना केवल भारत ही नहीं, अपितु विश्व के हित में होगा। स्वामी विवेकानंद ने जो भविष्यवाणी की थी अब सिर्फ उसका सत्य सिद्ध होना शेष है।

वर्तमान का भारत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जिस दिशा में आगे बढ़ रहा है, वह निश्चित रूप से स्वामी विवेकानंद के स्वप्न की पूर्ति कर रहा है। **15** अगस्त **2022** के स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दिए गए भाषण में अमृत काल के पाँच संकल्पों को हम स्वामी विवेकानंद के विचारों और प्रेरणा से भी जोड़ कर देख सकते हैं।

पहला संकल्प –'विकसित भारत

दूसरा संकल्प –'गुलामी से मुक्ति

तीसरा संकल्प –'विरासत पर गर्व

चौथा संकल्प –'एकता और एकजुटता

पांचवा संकल्प –'नागरिकों का कर्तव्य

उपरोक्त सभी बातों में घूम फिरकर वसुधैव कुटुम्बकम, एकता, कर्तव्य, विरासत, एकजुटता, प्राचीन गौरव इत्यादि का ही उल्लेख बार बार हो रहा है जिससे सिर्फ और सिर्फ एक ही बात स्पष्ट होती है और वो है 'विकास के लिए एकात्म मानववाद' की नैसर्गिक अनिवार्यता | अतः

दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद के दर्शन में ही विकसित भारत **2047** की कुँजी छिपी हुई है | स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी इसी एकता या एकात्म की विकास के लिए अनिवार्यता के संदर्भ में अपने कवि हृदय से कहते थे कि

बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों में हँसते-हँसते,
आग लगाकर जलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

हास्य-रूदन में, तूफ़ानों में,
अगर असंख्यक बलिदानों में,
उद्यानों में, वीरानों में,
अपमानों में, सम्मानों में,
उन्नत मस्तक, उभरा सीना,
पीड़ाओं में पलना होगा।
क़दम मिलाकर चलना होगा।

संदर्भ सूची :

- भाजपा पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाभियान **2015** पुस्तिका
- दीनदयाल उपाध्याय, "एकात्म मानववाद: तत्व, मीमांसा, सिध्दांत, विवेचना", प्रभात प्रकाशन
- अमरजीत सिंह, "एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय", प्रभात प्रकाशन
- विश्व बैंक मुख्य वेबसाइट, "भारत की स्थिति एक नज़र में",
- नीति आयोग विजन डाक्यूमेंट, "विकसित भारत@**2047**"
- विजन इंडिया@**2047** ट्रासफारमिंग द नेशन्स फ्यूचर, आर एंड आई डिवीजन, संसद भवन पुस्तकालय